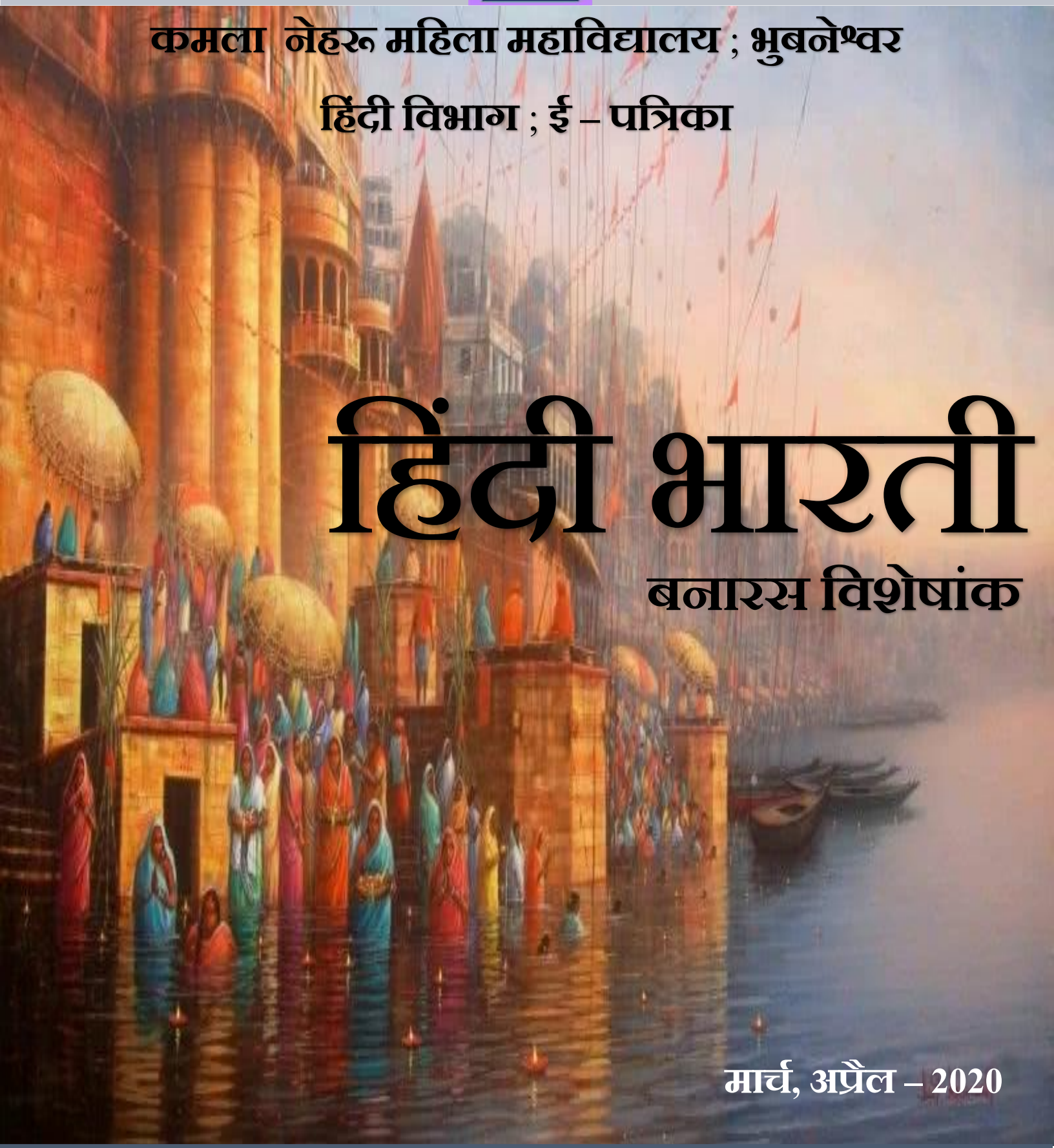

कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

हिंदी भारती

बनारस विशेषांक

मार्च, अप्रैल – 2020

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

सह – संपादक : कु. हाफिज़ा बेगम

कु. बर्षा प्रियदर्शिनी

कु. बांगी हंसदा

संपादकीय

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कमला नेहरू महिला महाविद्यालय का हिंदी विभाग शैक्षणिक यात्रा पर गया। इस बार छात्राओं के विशेष अनुरोध पर हमने बनारस को अपना गंतव्य बनाया। इस यात्रा में विभाग की दो अध्यापिकाओं के साथ 19 छात्रायें एवं 3 भूतपूर्व छात्रायें भी शामिल रहीं। बनारस आध्यात्म, संस्कृति, ललित कलाओं एवं साहित्य में विशेषकर हिंदी साहित्य के लिए जाना जाता है। बनारस में विभाग की छात्राओं ने बाबा विश्वनाथ एवं माँ अन्नपूर्णा के दर्शन कर आशीर्वाद लिया, गंगा आरती के सांस्कृतिक समारोह का उपभोग किया, भारतेंदु भवन, नागरी प्रचारिणी सभा, प्रेमचंद के गाँव लमही, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, भारतीय कला केंद्र एवं हिंदी विभाग के साथ जुड़कर हिंदी भाषा एवं साहित्य को समझने का प्रयास किया तथा सारनाथ में बुद्ध की शांति वाणी को आत्मसात किया। 3 दिनों की इस यात्रा के दौरान छात्राओं ने अपनी अनुभूतियों को कलमबद्ध किया है और प्रस्तुत किया है। गंतव्य एक ही था लेकिन छात्राओं की दृष्टि और दृष्टिकोण अलग अलग, इसी वजह से पत्रिका के लेखों में आपको अलग-अलग रंग, स्वाद, महक, ध्वनि और स्पर्श का आनंद मिलेगा। कृपया इसे पढ़ें एवं अपनी राय हम तक जरूर भेजें। आपकी बात हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो हमें हमेशा से प्रेरित करती रही है। हम 'हिंदी भारती' के स्तर को ऊँचा उठाना चाहते हैं, हम चाहते हैं कि विभाग की छात्रायें इस ओर अपना समय दें और स्तरीय लेख लिखें तथा साथ ही संपादन की कला भी सीखें। अतः हमने यह निर्णय लिया है कि 'हिंदी भारती' द्वैमासिक पत्रिका बने। आशा है आप हमारा साथ इसी तरह देते रहेंगे। हम आशा करते हैं कि हर अंक की तरह आप इस अंक को भी स्वीकार करते हुए भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे और आपका आदर और स्नेह हमें इसी तरह मिलता रहेगा। अब हमारी पत्रिका आप हमारे महाविद्यालय के वेब साइट www.knwcbbsr.com पर भी पढ़ सकते हैं।

संपादिका : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	नाम	पृ.स .
1.	शैक्षणिक यात्रा	लेख	शुभस्मिता	5
2.	गलियों का शहर बनारस	लेख	दीप्तिस्मिता साहू	8
3.	कहानियों की नगरी लमही	लेख	बांगी हंसदा	10
4.	लिंगराज धाम से विश्वनाथ धाम तक	लेख	हाफिज़ा	12
5.	घाटों पर बसा बनारस	लेख	शाकंबरी	14
6.	काशी हिंदू विश्वविद्यालय	लेख	संगृहित	17
7.	प्रेरणा	सम्मान	पिंकी सिंह	19
8.	वाराणसी	लेख	सौदामिनी	20
9.	महामना मदन मोहन मालवीय	लेख	संगृहित	21
10.	बनारस में वो तीन दिन	लेख	बांगी हंसदा	22
11.	किस्मत	कविता	शरीफा शरवरी	24
12.	नारी	कविता	संगीता	24
13.	मोक्षदायिनी काशी	लेख	कीर्तिपर्णा	25
14.	आपकी बात			
15.	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का इतिहास	यू ट्यूब लिंक		29
16.	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय हिंदी विभाग	यू ट्यूब लिंक		29
17.	यादों के गलियारों से	चित्र स्मृतियाँ		30

शैक्षणिक यात्रा

भ्रमण ज्ञान अर्जन व सीखने का सबसे अच्छा माध्यम है। मनोरंजन के साथ साथ सीखने का अवसर भ्रमण से मिलता है। रोज की दिनचर्या से कुछ हटकर नये स्थानों पर घूमने से न सिर्फ ज्ञान की वृद्धि होती है बल्कि मानसिक रूप से भी व्यक्ति तन्दरुस्त बनता है। यह भ्रमण तनाव से भी मुक्त रखता है। इसी वजह से राज्य के अधिकतर शिक्षण संस्थान छात्रों को इस तरह की शैक्षिक यात्राओं पर ले जाते हैं।

इस साल हमारे कमला नेहरू महिला महाविद्यालय की छात्राओं को उत्तरप्रदेश के गंगा नदी के तट पर स्थित ऐतिहासिक तथा दर्शनीय शहर वाराणसी की सैर पर ले जाया गया। यह एक पवित्र शहर है और हिंदुओं का तीर्थ माना जाता है। हिंदुओं के विश्वास के अनुसार गंगा में नहाने से पापों से मुक्ति मिलती है। इसे गलियों का शहर भी कहा जाता है। वाराणसी में भारतेंदु भवन से लेकर काशी हिंदु विश्वविद्यालय तक हमारे लिए भ्रमण के स्थान चिन्हित किए गये। 28/1/2020 के दिन जरूरत की चीजें, कपड़े तथा आपातकालीन सामग्रियों के साथ तैयार होकर अपने हिंदी विभाग के सहपाठियों के साथ रेलगाड़ी से रवाना हुए।

हम वाराणसी पहुँचकर श्री अन्नपूर्णा वासवी नित्य सत्रम् (धर्मशाला) में रुके। वहाँ हमारे खान पान की व्यवस्था हो चुकी थी। भले ही वहाँ की खाना हमारे ओड़िशा के खाना जैसा नहीं था, पर इसमें विविधता थी और भोजन बहुत ही स्वादिष्ट था। इसके बाद हम शैक्षणिक भ्रमण का प्रथम स्थल आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह भारतेंदु हरिश्चंद्र (1 सितम्बर 1850 - 6

जनवरी 1885) के घर 'भारतेंदु भवन' गए। वहाँ हमने भारतेंदु द्वारा व्यवहृत हाथी के दाँत की बनायी हुई कलमदानी, इत्र की शीशी और उनके द्वारा लिखी गई पांडुलिपियों और हथेली में समा जानेवाला गुरुग्रन्थ साहेब देखा। हमने वहाँ भारतेंदुजी के पांचवीं और छठी पिढ़ी को देखा। उन सबसे मिलकर मुझे यह महसूस हुआ जैसे हरिश्चन्द्र की आत्मा वहाँ बसी हो। फिर वहाँ से हम 'नागरी प्रचारिणि सभा' के अन्तर्गत पुस्तकालय और प्रकाशन एवं विक्रय विभाग भी गए। पर पुस्तकालय को छोड़ हर जगह अव्यवस्था पसरी हुई थी। इसकी हालत देखकर आखों में आँसू आ गए। जिस संस्था ने सिर्फ भारत ही नहीं समग्र विश्व में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए काम किया है, उसकी ऐसी दुःस्थिति ने हमें दुखी बना दिया। वहाँ से हम कुछ पत्रिकायें स्मारिका स्वरूप ले आये। उसके बाद हम गंगा घाट के नजारे देखने गए और शाम होते होते दशाश्वमेध घाट पर होनेवाली भव्य गंगा आरती का भावपूर्णता से आनंद लेते हुए रात को धर्मशाला लौट गए।

दुसरे दिन सुबह श्री विश्वनाथ के दर्शन के लिए विश्वनाथ मंदिर गए। वहाँ से लौटने के बाद हम सबने वाराणसी की प्रसिद्ध मिठाई 'मलइयों' जिसे 'दौलत की चाट' या 'निमिष' भी कहा जाता है, उसका आनंद लिया। मुंह में घुल जाने वाली 'मलइयों' का स्वाद अब तक जुबान पर बना हुआ है। वाराणसी की यह मशहूर मिठाई को खाने के बाद हम वाराणसी से 13 किलोमिटर की दूरी पर स्थित सारनाथ में बौद्ध मंदिर और चिनी बौद्ध मंदिर गए। वहाँ हम संस्कृत संस्करण धर्मराजिक स्तूप, धमेख स्तूप और बोधिवृक्ष देखा जहाँ गौतम बुद्ध ने सबसे पहले अपने पाँच शिष्यों को उपदेश दिया था। वहाँ पहुँचते ही हमारे मनको अद्भुत शांति मिली। हमें पता चला कि वास्तव में यहाँ गौतम बुद्ध जब अपने शिष्यों को उपदेश देते होंगे तब उनके मनको कितनी शांति मिली होगी। शिक्षक मंडल हमें वाराणसी से लगभग 8 कि. मि. दूर मुंशी प्रेमचंद जी की जन्म स्थली लमही ले गए। वहाँ पहुँचकर ऐसा लगा मानो प्रेमचंद की वह अमिट स्मृति आज भी वहाँ के लोगों के मन से बाहर नहीं निकल पाई है। वहाँ हमने 'मुंशी प्रेमचंद स्मारक', मुंशी प्रेमचंद जी का पैतृक निवास स्थल तथा उनकी समाधि और वह कुआँ भी देखा, जहाँ मुंशी प्रेमचंद कभी बैठकर कहानियाँ लिखा करते थे। शाम तक हम धर्मशाला लौट गये।

हमारे इस शैक्षिक भ्रमण का अंतिम स्थल बनारस हिंदु विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी के द्वारा सन 1916 में की गई थी। 1300 एकड़ के मुख्य परिसर में 3 संस्थान, 14 संकाय और लगभग 140 विभाग हैं। हम सब वहाँ पुस्तकालय गए। पुस्तकालय में बहुत सारी ऐसी पुस्तकें रखी गई थी जो ज्ञानवर्धक थी। हमें वहाँ के पुस्तकों को पढ़ने का अवसर भी मिला। इसके अलावा हम विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित श्री विश्वनाथ मंदिर, साईबर लाईब्रेरी, स्टॅडि सेंटर और भारत कला भवन भी गए। भारत कला भवन में ऐसे बहुत सारे चित्र संरक्षित थे जो कि तीन चार हजार साल पुराने थे। जिसको प्राचीन काल के कलाकारों ने बनाया था। वहाँ कुछ मूर्तियाँ भी थीं जिसमें एक काले और चमकदार पत्थर से

बनी हुई एक नर्तकी की मूर्ती मुझे बहुत ज्यादा पसंद आई। वह मूर्ति इतनी सुंदर थी कि उसे देखकर ही पता चलता था कि उस जमाने के कलाकार कितने मेहनती और प्रतिभाशाली रहे होंगे। अन्त में हम वहाँ के हिंदी विभाग गए, जो हमारे इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य था| हिंदी विभाग की स्थापना को 100 साल पूरे हो चुके है, अर्थात वर्ष 1920 को इसकी स्थापना हुई थी। तब से अब तक जितने विभाग प्रमुख हुये हैं, उन सबकी तस्वीरों को दीवारों पर लगाया गया था। रामचंद्र शुक्ल जी हिंदी विभाग के सर्वप्रथम विभाग प्रमुख थे। आप जिस कुर्सी पर बैठकर पढ़ाया करते थे वह कुर्सी आज भी वहाँ मौजुद है। फिर हम सब वहाँ के छात्रों के साथ बातचीत शुरु कर दी और कुछ समय में वहाँ एक सभा का आयोजन किया गया। समस्त शिक्षकगण तथा हिंदी विभाग की प्रमुख डा. रामकली सराफ पहुँची। सभा में सभी शिक्षकों को बोलने का अवसर मिला जो हमारे लिये बहुत ज्ञानवर्धक रहा। फिर शाम तक हम धर्मशाला लौटे। उसी रात आठ बजे हम सब भुबनेश्वर के लिए रवाना हुए।

वैसे तो इंसान जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है, मगर सीखने का स्वर्ण काल तो विद्यार्थी जीवन ही है। जीवन के इस पड़ाव में जितने अच्छे तरिके से विद्यर्थियों को सीखने का अवसर मिलता है, भ्रमण उनमें सबसे अच्छा माध्यम है। भ्रमण से छात्रों में जिम्मेदारी और आत्मविश्वास बढ़ता है। अपनी चीजों को संभाल कर रखना, समय पर गाड़ी पकड़ना, अपने दोस्तों के साथ सामंजस्य बनाये रखना तथा अपने आस - पास के स्थानों के बारे में जानकारी रखना आदि सीखते हैं। ऐसी स्थिति में अपने पास एक छोटी सी कॉपी (नोट बुक या डाएरी) रखना और भी लभदायक सिद्ध हो सकता है।

शुभस्मिता, +3 प्रथम वर्ष

गलियों का शहर बनारस

बनारस गलियों का शहर है, यह मैंने सिर्फ सुना था। कभी सोचा नहीं था, कि मैं बनारस की गलियों को देखूंगी। पर कहते हैं ना जो आपने कभी सोचा नहीं होगा वही वस्तु आपको मिल जाए तो खुशियों का ठिकाना नहीं रहता। कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ।

28 फरवरी को हम सब अपने कॉलेज के हिंदी विभाग की तरफ से शैक्षणिक यात्रा के लिए बनारस गए थे। जब मैं बनारस पहुंची तो मैंने देखा वहां के मकान और मकानों के बीच से जो गलियां जाती हैं, वह काफी पुरानी थी। क्योंकि उन गलियों के रास्ते पत्थरों के थे, इससे पता चलता है कि वह अब से लगभग कई सो वर्षों से भी अधिक पुराने थे। क्योंकि अभी तो ऐसी गलियां नहीं है, जो पत्थरों की बनी हो।

बनारस गंगा के तट पर बसा एक सभ्यता वाला शहर है। यहां की गलियां भवनों के जाल में अपने आप ही बन गई है। यहां के भवन जितने ऊंचे हैं, उतनी ही लंबी और पतली यहां की गलियां हैं। बनारस की यह गलियां किसी जादुई नगरी के तिलिस्मी और भूल भुलैया के समान लगती हैं। कोई अनजान व्यक्ति अगर इन गलियों में आ जाए तो कभी निकल ना पाए। पहली गली में प्रवेश करते ही आपको वहां गलियों के अंदर और दो-तीन गलियां मिलेंगी। मैं जब उन गलियों के बीच से गुजर रही थी, तो ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे मैं कभी भी निकल नहीं पाऊंगी। उन गलियों में मुझे घूमना इतना मजेदार लग रहा था। मेरा मन हुआ कि मैं यहां अपनी सहेलियों के साथ लुका छुपि खेलूँ।

मैंने जितना भी बनारस की गलियों के बारे में सुना था, उससे भी कहीं ज्यादा अद्भुत मुझे यहाँ आकर लगा। यहां की हर गली में कुछ अलग ही बात है। सभी गली एक समान तो दिखती हैं, परंतु इन सभी गलियों के अलग-अलग नाम है, अलग अलग पहचान है। पर इन सभी

गलियों के नाम जानने का अवसर हमें प्राप्त नहीं हुआ, क्योंकि हमें शीघ्र ही अपनी मंजिल की तरफ आगे बढ़ना था। उन गलियों की एक बात बड़े आश्चर्य करने वाली थी और वो ये कि गलियां जितनी भी पतली क्यों ना हो उनके किनारे बहुत सारी दुकानें थी। कहीं पर किराने की दुकान तो, कहीं पर कपड़ों की दुकान। उन छोटी सी गलियों में भी इतनी सारी गाड़ियां आना जाना कर रही थी। जहां पर दो लोगों का चलना भी मुश्किल से हो रहा था। यहां पर सभी गलियों में आपको विश्व का ऐसा कोई व्यवसाय या समान नहीं होगा जो आपको इन गलियों में ना मिले। यहां पर सभी गलियों में आपको सभी जाति धर्म के लोग मिलेंगे। बनारस की सभी गलियाँ किसी ना किसी रास्ते में मिलती है। यह स्वयं को निर्धारित करना होता है कि हम कौन सी गली में जाएंगे जो सीधे हमको अपनी मंजिल की तरफ पहुंचा दे।

इन गलियों से मैंने एक बात सीखी है, यदि आप अपनी जिंदगी में सही रास्ता चुनते हैं, तो आपको अपनी मंजिल जरूर मिलेगी। यदि आपका एक कदम भी गलत रास्ता चुनता है, तो आप अपने मंजिल से दूर हो जाएंगे यही बनारस की गलियां थोड़ा सा जिंदगी की बहुत बड़ी सीख हमें सिखाती है।

इसीलिए भी शायद बनारस गलियों का शहर है आज यह बात मैंने महसूस की।

दीप्तिस्मिता साहू, +3 प्रथम वर्ष

कहानियों की नगरी लमही

लमही सिर्फ तीन अक्षर नहीं बल्कि अगणित किस्से कहानियों की अक्षय पिटारी है। लमही गांव में प्रेमचंद जी ने अपना सारा जीवन और अपने हर लमहे को कहानियों के सुपुर्द कर दिया। इसलिए भी प्रेमचन्द जी को कथा सम्राट कहा जाता है, और उनके गांव लमही को कहानियों की धरती कहते हैं।

जब हम सब शैक्षणिक यात्रा के लिए बनारस गए थे, तो बनारस से 15 किलोमीटर दूर लमही गांव भी गए। जब मैं लमही गांव पहुंची तो वहां पहुंचकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो जिन कहानियों और उपन्यासों को मैंने पढ़ा, जिनकी छवि मेरे मन में मंडराती थी, वो सारी छवियाँ यहाँ इसी लमही गांव में है।

प्रवेश द्वार के ऊपर "प्रेमचंद जी की स्मृति" लिखा हुआ था। प्रवेश द्वार के दोनों ओर प्रेमचंद की कहानियों के पात्रों की प्रतिमायें बनी हुई थी, जैसे 'गोदान' का हीरो होरी, 'दो बैलों की कथा' के हीरो हीरा और मोती और उनका मालिक झूरी, 'ईदगाह' का हामिद और रोटी पकाती अमीना दादी आदि। उसके पश्चात कुछ दूर जाने पर प्रेमचंद जी का घर आ गया। हालांकि उनके घर में बहुत परिवर्तन आ गया है, जैसे पहले कच्चा मकान था, अब पक्का मकान बना दिया गया है। प्रेमचंद जी का घर दूर से देखने पर बहुत ही सुंदर दिखाई पड़ता है। उनके पूरे मकान को सफेद रंग से रंग दिया गया है। जब उनके मकान में प्रवेश किया तो उनके घर के आंगन में प्रेमचंद जी की स्मृति में उनकी प्रतिमा बनी हुई थी। उनकी प्रतिमा को देखकर ऐसा लगता है, जैसे प्रेमचंद जी स्वयं वहां पर खड़े हैं, और मौन रहकर हम सब को देख रहे हो। प्रेमचंद जी के मकान के अंदर जाकर हमने देखा की उनके द्वारा लिखी गये कई उपन्यास और कहानियों के

पुस्तक नीचे के दो कमरों में रखी हुई थी और कुछ बाहर भी सजा कर रखी हुए थी। वहीं दीवार पर प्रेमचंद जी का प्रिय गुल्ली डंडा को भी रखा गया था, और हमीद का चिमटा जिसे हमीद ने अपनी दादी के लिए ईदगाह मैं मिले पैसे से खरीदा था, इन दो चीजों को बड़े ही अच्छे से संजोकर रखा गया था। बाकी सारे कमरे खाली थे, हर कमरे मे प्रेमचंद जी की यादें बसी हुई हैं। और मकान के पिछले हिस्से में वही कुआं अभी भी मौजूद है जिसके किनारे बैठकर प्रेमचंद जी कभी-कभी कहानियां लिखा करते थे।

लमही का पूरा गांव ही मेरे लिए तो कहानियों का पिटारा बन गया था, जिनकी कहानियों और उपन्यासों को पढ़कर आंखों में आंसू आ जाते हैं, मन में एक नई उमंग आती है और गरीबों के ऊपर अत्याचार करने वाले जमीदारों पर घृणा। ऐसे कहानीकार के घर जाना मेरे लिए एक मनचाहे स्वप्न को पूर्ण करने जैसा था। लमही गांव का हर एक घर अपनी एक कहानी कहता है। ऐसा लगता है जैसे हर सड़क हर गली अपनी ही आप बीती सुना रही हो। इसीलिए लमही गांव को कहानियों की नगरी भी कहते हैं।

बांगी हांसदा, +3 प्रथम वर्ष

लिंगराज धाम से विश्वनाथ धाम तक

हमारे लिये ये बड़े ही सौभाग्य की बात है कि शैक्षणिक यात्रा के लिये हमें वाराणसी भ्रमण का अवसर मिला। हम सब वाराणसी पहूँचकर सबसे पहले भारतेंदु भवन तथा भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी के घर गये थे। वहाँ पर हमारी मुलाकात श्री भारतेंदु दीपेश चौधरी जी से हूई। दीपेश जी भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के तीसरी पीढ़ी में आते हैं, जिन्होंने हम सबको भारतेंदु जी के बारे में रोचक जानकारी दी। हमने वह कमरा देखा जहाँ वह बैठकर वे साहित्य सृजन करते थे। हम सबने उनकी कुछ कीमती वस्तुएँ भी देखी जिनका वे इस्तेमाल करते थे। जिसमें एक कलम और दवातदानी, पानदानी और इत्रदानी आदि शामिल थे। हमें उनके परिवार के बारे में बहूत रोचक जानकारी मिली और तथा वहाँ हमें भारतेंदु जी की और उनके परिवार की तस्वीर भी देखने को मिली, उनकी इत्रदानी बहूत ही ज्यादा खूबसूरत थी। उनके हस्तलिखित पत्रों को देख हम सबको सुखद आश्चर्य हुआ। हमने उनके 300 साल पुराने घर को देखा, जिसकी हर ईंट उस युग की गाथा कहती थी। 300 साल पुराने उस घर को उनके उत्तराधिकारियों ने बहूत सहेज कर रखा है। दीपेश जी के परिवार ने हम सबका बहूत स्नेह से स्वागत किया और हम सबका अच्छे से खयाल रखा। उस घर की यादों को अपने कैमेरे में और अपने हृदय में संजोये हुये हम वहाँ से नागरीप्रचारिणी सभा की ओर निकल पड़े।

हम सब फिर श्री भारतेंदु दीपेश चौधरी के साथ नागरीप्रचारिणी सभा गये। वहाँ पर सारे प्रसिद्ध लेखकों की तस्वीरें देखी। वहाँ पर बहुत सारी पत्रिकाएँ थी। हम सब वहाँ से कुछ पत्रिकाएँ भी लाये। फिर हम लोग गंगा घाट गये। वाराणासी की छोटी छोटी घुमावदार गलियों में

हम चलने लगे, ये गलियाँ ऐसी थी जहाँ कोई भी रास्ता भटक सकता है। हम सब गंगा घाट पहुँचे तो वहाँ का सौंदर्य अद्भुत था। हम सब नाव पर बैठ कर बनारस के सारे घाट देखे और शाम को गंगा आरती भी देखी। गंगा आरती देखना बहुत ही अच्छा अनुभव रहा। लोगों में असीम श्रद्धा देख मैं चौंक गयी। दूसरे दिन सुबह चार बजे उठ कर हम काशी विश्वनाथ मंदिर गये। मंदिर बहुत ज्यादा खुबसूरत था, वहाँ पर सारे भगवानों की मुर्तियाँ थी। हमने माँ अन्नपूर्णा के भी दर्शन किये। थोड़ा आराम कर हम सब बस में सवार होकर सारनाथ की ओर निकल गये। सारनाथ वह जगह है जहाँ पर गौतम बुद्ध ने पहला उपदेश दिया था। वहाँ जाने के पश्चात हमें गौतम बुद्ध जी के बारे मैं बहुत सारी बातें और कथायें पता चली। किस तरह से उन्होंने तपस्या की और किस तरह उन्हें ज्ञान की प्रप्ति हुई। उंके जीवन से जुड़े भित्ति चित्रों देख कर मैं तो बुद्ध काल में पहुँच गई।

सारनाथ से हम लमही गये। लमही वह जगह है जहाँ प्रेमचंद जी का जन्म हुआ था। वहाँ पर हमने देखा कि प्रेमचंद जी की बहुत सारी किताबें रखी थी और वहाँ पर लिखा भी गया था कि कब प्रेमचंद जी को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनके पूरे परिवार की तस्वीर देखी और उनका घर भी देखा। वहाँ के संरक्षक पाण्डेय जी ने प्रेमचंद जी के बारे में जानकारी दी कि तरह वे कहानी लिखा करते थे और कहाँ बैठ कर लिखा करते थे।

अगले दिन हम सब बनारस हिंदु विश्वविद्यालय के पुस्तकालय गये जहाँ बहुत सारी किताबें थी। वहाँ से हम भारतकला भवन गये जो बहुत खुबसूरत संग्रहालय है। फिर हम विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग गये। बनारस हिंदु विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग इस वर्ष अपने स्थापना की शताब्दी मना रहा है। विभाग में हम लोगों का स्वागत हुआ तथा एक छोटी सी सभा का आयोजन किया गया। विभाग के शिक्षकों की बातें अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक थी। अब हम सबने कमर कस ली है कि हम सब स्नातकोत्तर इसी विश्वविद्यालय से करेंगी।

हफिज़ा बेगम, +3 तृतीय वर्ष

घाटों पर बसा बनारस

बनारस (वारणसी) शहर हमारे देश के उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध शहर है। हमारे देश का सबसे पवित्र शहर कहा जाने वाला बनारस ना केवल मंदिर और अपने धार्मिक परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है पर गलियों और घाटों के लिए भी प्रसिद्ध है। बनारस के तटों पर सूर्य की किरणें जब पड़ती है तो जो देखते ही बनती है। वहाँ का दृष्य मनोरम हो जाता है। ऐसा कहा भी जाता है कि बनारस की सुबह, अबध की शाम, और मालवा की रातें विश्व प्रसिद्ध हैं।

वैसे तो बनारस की बहुत सी चीजें अपने आप में गौरवशाली इतिहास लिये हुए हैं। यहाँ के मनोरम दृष्य, घाट, इमारते, मंदिर इत्यादि एवं यहाँ के स्वादिष्ट व्यंजन, यहाँ की गंगा जमुनी तहजीब यहाँ की शान है। जो कि वर्षो से स्थापित होकर चली आ रही है। यहाँ के लोग एवं बाहर रहने वाले जनमानस बनारस में आकर मोक्ष की कामना करते हैं। कहा जाता है कि मृत्यु होने पर मनुष्य को सीधे मोक्ष बनारस में प्राप्त होता है। कितनी पवित्र भूमि है बनारस

बनारस के घाट:-

बनारस घाटों का शहर है। बनारस में गंगा तट पर अनेक सुंदर घाट बने हैं। सभी घाट किसी ना किसी पौराणिक या धार्मिक कथा से जुड़े हैं। बनारसी के घाटों की आकृति धनुष की तरह होने की वजह से बहुत ही मनोहारी लगते है। सभी घाटों के पूर्वाभिमुखी होने से सूर्योदय के समय घाटों पर सूर्य की पहली किरणें दस्तक देती हैं। उत्तर दिशा में राजघाट से प्रारंभ होकर दक्षिण में असि घाट तक सौ से भी अधिक घाट हैं।

प्रमुख घाट:-

दशाश्वमेध घाट-

सबसे पुराने और सबसे महत्त्वपूर्ण घाटों में एक दशाश्वमेध घाट वारणसी के सबसे ओजस्वी घाटों में से एक है। इस घाट को लेकर दो हिन्दू पौराणिक कथाएँ प्रचलित है, पहला कि इस घाट का निर्माण भगवान ब्रम्हा ने भगवान शिव के स्वागत के लिए करवाया था, दूसरी पौराणिक कथा है कि ययाँ यज्ञ के दौरान 10 घोड़ों की बलि दी गई थी। मध्यकाल में गंगा आरती के दौरान दशाश्वमेध घाट जीवंत हो उठता है। भगवा रंग के परिधान को धारण किए युवा पंडितो द्वारा प्रस्तुत गंगा आरती का आयोजन एक विस्तृत समारोह के रूप में होता है, जो

पूजा, नृत्य और अग्नि के साथ समाप्त की जाती है। नदी किनारे दीपमालाओं की रोशनी और चंदन की महक घाट को महका देती है। घाट के नजदीक स्थित जयपुर के महाराजा जयसिंह द्वारा बनवाये गये वेधशाला जंतर-मंतर का नज़ारा भी दिखाई देता है।

मणिकर्णिका घाट-

इस घाट से जुड़ी भी दो कथाएं है। एक के अनुसार भगवान विष्णु ने शिव की तपस्या करते हुए अपने सुदर्शन चक्र से यहाँ एक कुण्ड खोदा था। जिसमें तपस्या के समय आया हुआ उनका स्वेद भर गया था। जब शिव वहाँ प्रसन्न कर आये तब विष्णु के कान की मणिकर्णिका उस कुंड में गिर गई थी। दूसरी कथा के अनुसार भगवान शिव को अपने भक्तों से छुट्टी ही नही मिल पाती थी। देवी पार्वती इससे परेशान हुई और शिव जी को रोके रखने हेतु अपने कान की मणिकर्णिका वहीं छुपा दी और शिवजी को उसे ढूंढ़ने को कहा। शिवजी उसे ढूंढ नहीं पाये और आज तक जिसकी भी अंत्योष्टि उस घाट पर की जाती है, वे उससे पूछते है कि क्या उसने देखी है? प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार मणिकर्णिका घाट का स्वामी वही चाण्डाल था, जिसने सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को खरीदा था। उसने राजा को अपना दास बनाकर उस घाट पर अन्तयेष्टि करने आने वाले लोगो से कर वसूलने का काम दे दिया था। इस घाट की विशेषता ये है, कि यहाँ लगातार हिन्दू अन्तयेष्टि होती रहती है व घाट पर चिता की अग्नि लगातार जलती ही रहती है, कभी भी बुझने नहीं पाती है।

सिंधिया घाट-

सिंधिया घाट जिसे शिन्दे घाट भी कहते है, मणिकर्णिका घाट के उत्तरी ओर लगा हुआ है। यह घाट काशी के बड़े तथा सुंदर घाटों में से एक है। इस घाट का निर्माण 250 वर्ष पूर्व 1830 में ग्वालियर की महारानी बैजाबाई सिंधिया ने कराया था तथा और इससे लगा हुआ शिव मंदिर आंशिक रूप से नदी के जल में डूबा हुआ है। इस घाट के ऊपर काशी के अनेकों प्रभावशाली लोगों द्वारा बनवाये गए मंदिर स्थित है। ये संकरी घुमावदार गलियों में सिद्ध-क्षेत्र में स्थित है। मान्यतानुसार अग्निदेव का जन्म यही हुआ था। यहाँ हिन्दू लोग वीर्यस्वर की अर्चना करते हैं और पुत्र कामना करते हैं। यहीं पर आत्मविरेस्वर तथा दत्तात्रेय के प्रसिद्ध मंदिर है। संकठा घाट पर बड़ौदा के राजा का महल है। इसका निर्माण महानाबाई ने कराया था। यही संकठा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। घाट के अगल-बगल के क्षेत्र को "देवलोक" कहते हैं।

मन मंदिर घाट-

जयपुर के महाराजा जयसिंह द्वितीय ने ये घाट 1550 में बनवाया था। इसमें नक्काशी से अलंकृत झरोखे बने हैं। इसके साथ ही उन्होंने वाराणसी में यंत्र मंत्र वेधशाला भी बनवाई थी जो दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, मथुरा के संग पांचवी खगोलशास्त्रिय वेधशाला है। इस घाट के उत्तरी ओर एक सुंदर बारजा है, जो सोमेशवरलिंग को अर्ध्य देने के लिये बनवाया गई थी।

ललिता घाट-

स्वर्गीय नेपाल नरेश ने ये घाट वारणसी में उत्तरी ओर बनवाया था। यहीं उन्होंने एक नेपाली काठमांडू शैली का पगोडा गंगा-केशव मंदिर भी बनवाया था, जिसमें भगवान विष्णु प्रतिष्ठित हैं। इस मंदिर में पशुपतिनाथ महादेव की भी एक छवि लगी है।

असि घाट-

असि घाट असि नदी के संगम के निकट स्थित है। इस सुंदर घाट पर स्थानीय उत्सव एवं क्रीड़ाओं के आयोजन होते रहते हैं। ये घाटों की कतार में अंतिम घाट है। ये चित्रकारों और छायाचित्रकारों का भी प्रिय स्थल है। यहीं स्वामी प्राणावन्द, भारत सेवाश्रम संघ के प्रवर्तक ने सिद्धि पाई थी। उन्होंने यहीं अपने गोरखनाथ के गुरु गभीरानंद के गुरुत्व में भगवान शिव की तपस्या की थी।

इनके अलावा शहर के कई घाट मराठा साम्राज्य के अधीनस्थ काल में बनवाये गए थे। वर्तमान वारणसी के सरक्षकों में मराठा, शिंदे(सिंधिया), होल्कर, भोंसले और पेशवा परिवार रहे हैं। अधिकतर घाट स्नान-घाट है, कुछ घाट अंत्योष्टि घाट हैं। कई घाट किसी कथा आदि से जुड़े हुए हैं, जैसे मणिकर्णिका घाट, जब कि कुछ घाट निजी स्वामित्व के भी हैं। पूर्व काशी नरेश का शिवाल घाट और काली घाट निजी हैं। ये सभी घाट वारणसी के समृद्ध इतिहास और संस्कृतिक संपदा के प्रतीक हैं।

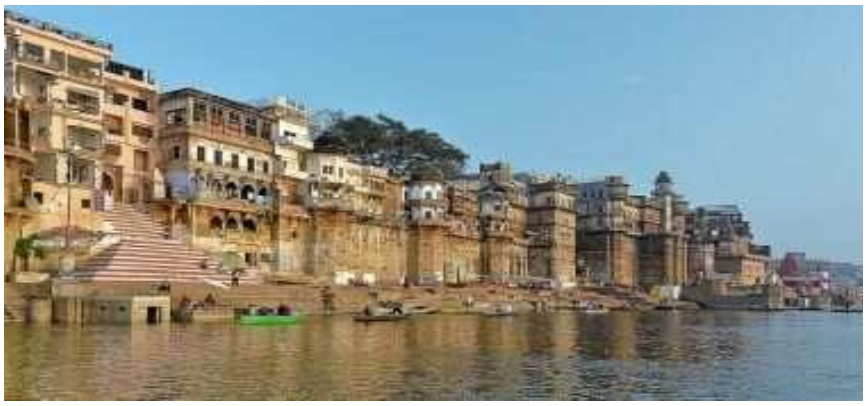

शाकंबरी, +3 द्वितीय वर्ष

काशी हिंदू विश्वविद्यालय

पं॰ मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रीगणेश 1904 ई. में किया, जब काशीनरेश महाराज प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में संस्थापकों की प्रथम बैठक हुई। 1905 ई. में विश्वविद्यालय का प्रथम पाठ्यक्रम प्रकाशित हुआ। जनवरी, 1906 ई. में कुंभ मेले में मालवीय जी ने त्रिवेणी संगम पर भारत भर से आयी जनता के बीच अपने संकल्प को दोहराया। कहा जाता है, वहीं एक वृद्धा ने मालवीय जी को इस कार्य के लिए सर्वप्रथम एक पैसा चन्दे के रूप में दिया। डॉ॰ ऐनी बेसेन्ट काशी में विश्वविद्यालय की स्थापना में आगे बढ़ रही थीं। इन्हीं दिनों दरभंगा के राजा महाराजा रामेश्वर सिंह भी काशी में "शारदा विद्यापीठ" की स्थापना करना चाहते थे। इन तीन विश्वविद्यालयों की योजना परस्पर विरोधी थी, अतः मालवीय जी ने डॉ॰ बेसेंट और महाराज रामेश्वर सिंह से परामर्श कर अपनी योजना में सहयोग देने के लिए उन दोनों को राजी कर लिया। फलस्वरूप बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी सोसाइटी की 15 दिसम्बर 1911 को स्थापना हुई, जिसके महाराज दरभंगा अध्यक्ष, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रमुख बैरिस्टर सुन्दरलाल सचिव, महाराज प्रभुनारायण सिंह, पं॰ मदनमोहन मालवीय एवं डॉ॰ ऐनी बेसेंट सम्मानित सदस्य थीं। तत्कालीन शिक्षामंत्री सर हारकोर्ट बटलर के प्रयास से 1915 ई. में केंद्रीय विधानसभा से हिंदू यूनिवर्सिटी ऐक्ट पारित हुआ, जिसे तत्कालीन गवर्नर

जनरल लार्ड हार्डिंज ने तुरन्त स्वीकृति प्रदान कर दी। 14 जनवरी 1916 ई. (वसंतपंचमी) के दिन ससमारोह वाराणसी में गंगातट के पश्चिम, रामनगर के समानान्तर महाराज प्रभुनारायण सिंह द्वारा प्रदत्त भूमि में काशी हिंदू विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ। उक्त समारोह में देश के अनेक गवर्नरों, राजे-रजवाड़ों तथा सामंतों ने गवर्नर जनरल एवं वाइसराय का स्वागत और मालवीय जी से सहयोग करने के लिए हिस्सा लिया। अनेक शिक्षाविद् वैज्ञानिक एवं समाजसेवी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। गांधी जी भी विशेष निमन्त्रण पर पधारे थे। अपने वाराणसी आगमन पर गांधी जी ने डॉ॰ बेसेंट की अध्यक्षता में आयोजित सभा में राजा-रजवाड़ों, सामन्तों तथा देश के अनेक गण्यमान्य लोगों के बीच, अपना वह ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसमें एक ओर ब्रिटिश सरकार की और दूसरी ओर हीरे-जवाहरात तथा सरकारी उपाधियों से लदे, देशी रियासतों के शासकों की घोर भर्त्सना की गई।

डॉ॰ बेसेंट द्वारा समर्पित सेंट्रल हिंदू कालेज में काशी हिंदू विश्वविद्यालय का विधिवत शिक्षणकार्य, 1 अक्टूबर 1917 से आरम्भ हुआ। 1916 ई. में आयी बाढ़ के कारण स्थापना स्थल से हटकर कुछ पश्चिम में 1,300 एकड़ भूमि में निर्मित वर्तमान विश्वविद्यालय में सबसे पहले इंजीनियरिंग कालेज का निर्माण हूआ तत्पश्चात क्रमशः आर्ट्स कालेज एवं साइंस कालेज स्थापित किया गया। 1921 ई. से विश्वविद्यालय की पूरी पढ़ाई कमच्छा कॉलेज से स्थानांतरित होकर नए भवनों में प्रारंभ हुई। विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन 13 दिसम्बर 1921 को प्रिंस ऑव वेल्स ने किया।

प्रेरणा

कहते हैं कि भगवान जो भी करता है सबकी भलाई के लिए करता है। हर एक कार्य के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। भलाई हो या बुराई सब इसे अपने विवेक अनुसार ग्रहण करते हैं।

जिंदगी का एक नया पड़ाव, आई. ए. के बाद बी. ए. करना था और मुझे अपने घर के पास वाले कॉलेज में पढ़ना था। जो किसी कारण संभव नहीं हो पाया। "कमला नेहरू महिला महाविद्यालय", किसने सोचा था कि यहाँ मेरे जीवन को एक नई दिशा मिलने वाली थी। एक ऐसी दिशा जिसने मेरी सोचने-विचारने की क्षमता को पूरी तरीके से बदल दिया। बी.ए. प्रथम वर्ष में ज्यादातर कॉलेज जा ही नहीं पाई, क्योंकि घर से कॉलेज दूर था। जिसकी वजह से मैं अपने शिक्षकों से ज्यादा मिलजुल नहीं पाई, जिसका मुझे आज भी अफसोस है। बी.ए. द्वितीय वर्ष के बाद हमारे विभाग में एक नए चेहरे का आगमन हुआ। उस चेहरे में कुछ ऐसा था जो प्रथम दर्शन में हर किसी को आकर्षित करने की क्षमता रखता है। गोरे माथे पर बड़ी लाल बिंदी, हाथों में हरी भरी चूड़ियां चेहरे पर स्मित मुस्कान, कोई देखे तो समझे कि महिला किस गांव से आई है। पर उस ग्रामीण वेशभूषा में उनका शिक्षित स्वभाव, चिंताशीलता, प्रौढ़ बुद्धि परिष्कृत रूप से झलक रही थी।

किसी व्यक्ति से प्रथम मुलाकात में ही उनके व्यक्तित्व का पता नहीं चलता, जब तक कि हम उनके व्यक्तित्व से जुड़ नहीं जाते तब तक वह हमारे लिए अपरिचित ही रहता है। दो साल बहुत कम थे उन्हें समझने के लिए। थोड़ा और वक्त भी चाहिए था जो कि मिला नहीं।

हर व्यक्ति के अंदर कुछ खासियत होती है उस खास की पहचान कोई खास व्यक्ति ही कर पाता है। मेरे अंदर भी कुछ खासियत है जो मुझे नजर ना आया पर उनकी आंखें पहचान गई। एक व्यक्ति कितना प्रभावशाली हो सकता है, एक मां के रूप में, एक दोस्त के रूप में, एक गुरु के रूप में। मेरे जीवन में भी एक नया नाम जुड़ गया था। गुरु होते हुए केवल गुरु के रूप में अपने आप को सीमित ना रखते हुए, वे अपने व्यक्तित्व के जरिए इन तमाम रिश्ते को बखूबी से निभाती आ रहीं हैं, और निभाएंगी भी। जिसको हमने महसूस किया है।

जहां आग होती है वहां धुआं उठेगा ही, जहां नाम होता है वहां अपवाद होगा ही। पर उन अपवाद की फिकर वही करता है, जो मुखौटा पहने घूमता है। हमारे जीवन को हमारी चिंता धारा को, शैली को किस तरह परिवर्तित किया उन्होंने, यह हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते। बस महसूस करने की बात है।

मैं जानती हूं कि मेरे लेख में उतनी सरसता नहीं है कि ये किसी पाठकों का ध्यान आकर्षित कर सकें। पर उसे बेहतर बनाने की कोशिश अब भी जारी है। प्रेरणा वही एक 'डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी'। कोई भी चीज बेवजह नहीं होती, कोई ना कोई वजह जरूर होती है। बस अपने ऊपर पूरे तरीके से भरोसा रखने की देर है।

इस लेख के माध्यम से मैं अपने जूनियर छात्राओं को यह बताना चाहूंगी कि कभी अपने शिक्षकों को हेय दृष्टि से ना देखें। वे पथ प्रदर्शक हैं, ऐसे पथ प्रदर्शक जो आपके मार्ग को बनाएंगे भी और उस पर चलना सिखाएंगे भी।

पिंकी सिंह, भूतपूर्व छात्रा

वाराणसी

वाराणसी भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध नगर है। उसे बनारस और काशी भी कहते है, इसे हिन्दू धर्म में सर्वाधिक पवित्र नगरों में से एक माना जाता है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत बनारस में ही जन्म एवं विकसित हुआ है। भारत के कई दार्शनिक कवि, लेखक, संगीतज्ञ, बनारस में रहे हैं। जिनमें कबीर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद आदि हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू धर्म का परम पवित्र ग्रंथ रामचरित मानस की रचना बनारस में ही की थी। गौतम बुद्ध अपना प्रथम प्रवचन बनारस के निकट सारनाथ नामक स्थान में दिए थे।

बनारस में तीन बड़े विश्वविद्यालय है। जिनके नाम बनारास हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय है। एवं यहाँ के रहने वाले लोग भोजपुरी भाषा बोलते है जो हिंदी की ही एक बोली है। बनारस को मंदिरों का शहर, भारत की धार्मिक राजधानी, भगवान शिव की नगरी, दीपों का शहर आदि भी कहा जाता है।

बनारस में बहुत ही प्रमुख स्थान है, जैसे गंगा घाट, विश्वनाथ एवं माँ अन्नपूर्णा मंदिर, सारनाथ आदि प्रमुख स्थान हैं। सारनाथ बौद्ध धर्म का प्रमुख तीर्थ स्थल है। ज्ञान प्राप्ति के बाद भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश यहीं सारनाथ में दिया था, जिसे 'धर्म चक्र प्रवर्तन' का नाम दिया गया है। यहीं से बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार का आरंभ हुआ था। सारनाथ बौद्ध धर्म के प्रमुख तीर्थ में से एक है। इतिहास बताता है कि बौद्ध धर्म की शुरुआत इसी जगह से हुई है। एक प्रमुख स्थान है, काशी विश्वनाथ मंदिर है। इस मंदिर में भगवान शिव जी को पूजा किया जाता है, एवं भगवान की दर्शन के लिए ड्रेस कोड लागू है। इस ड्रेस कोड के मुताबिक बाबा के स्पर्श दर्शन के लिए पुरुषों को धोती कुर्ती और महिलाओं को साड़ी पहना होता है, वरना वह बाबा की दर्शन नहीं कर सकते। काशी को भगवान शिव की राजधानी कहा जाता है, कहते हैं इसे खुद शिव ने चुना और वे यहाँ साक्षात माँ पार्वती के साथ निवास करते हैं। सनातन परंपरा में काशी को शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक बताते हैं, और वहाँ शिव का निवास माना जाता है। उसे मुक्ति क्षेत्र माना जाता है। बाबा विश्वनाथ काशी में गुरु और राजा के रूप में विराजमान हैं, और माँ भगवती अन्नपूर्णा के रूप में हर प्राणी का पेट भरती हैं।

सौदामिनी, +3 द्वितीय वर्ष

महामना मदन मोहन मालवीय

महामना मदन मोहन मालवीय

(25 दिसम्बर 1861 - 1946)

आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें **महामना** की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृ भाषा तथा भारतमाता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिये तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सकें। मालवीयजी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्मत्याग में अद्वितीय थे। इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे अपितु स्वयं उनका पालन भी किया करते थे। वे अपने व्यवहार में सदैव मृदुभाषी रहे।

कर्म ही उनका जीवन था। अनेक संस्थाओं के जनक एवं सफल संचालक के रूप में उनकी अपनी विधि व्यवस्था का सुचारु सम्पादन करते हुए उन्होंने कभी भी रोष अथवा कड़ी भाषा का प्रयोग नहीं किया।

भारत सरकार ने 24 दिसम्बर 2015 को उन्हें भारत रत्न से अलंकृत किया।

हिन्दी के उत्थान में मालवीय जी की भूमिका ऐतिहासिक है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में हिन्दी गद्य के निर्माण में संलग्न मनीषियों में 'मकरंद' तथा 'झक्कड़सिंह' के उपनाम से विद्यार्थी जीवन में रसात्मक काव्य रचना के लिये ख्यातिलब्ध मालवीयजी ने देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल के सम्मुख 1898 ई0 में विविध प्रमाण प्रस्तुत करके कचहरियों में प्रवेश दिलाया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन (काशी-1910) के अध्यक्षीय अभिभाषण में हिन्दी के स्वरूप निरूपण में उन्होंने कहा कि "उसे फारसी अरबी के बड़े बड़े शब्दों से लादना जैसे बुरा है, वैसे ही अकारण संस्कृत शब्दों से गूँथना भी अच्छा नहीं और भविष्यवाणी की कि एक दिन यही भाषा राष्ट्रभाषा होगी।" सम्मेलन के एक अन्य वार्षिक अधिवेशन (बम्बई-1919) के सभापति पद से उन्होंने हिन्दी उर्दू के प्रश्न को, धर्म का नहीं अपितु राष्ट्रीयता का प्रश्न बतलाते हुए उद्घोष किया कि साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है। समस्त देश की प्रान्तीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिन्दी को अपनाने के आग्रह के साथ यह भविष्यवाणी भी की कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा कि जिस भाँति अंग्रेजी विश्वभाषा हो रही है उसी भाँति हिन्दी का भी सर्वत्र प्रचार होगा। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय रूप का लक्ष्य भी दिया।

बनारस में वो तीन दिन

हर साल हमारे कमला नेहरू महिला महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की ओर से हम सब शैक्षणिक यात्रा के लिए जाते हैं। परन्तु शैक्षणिक यात्रा का ये मेरा पहला अनुभव था। मैं बहुत उत्साहित थी, क्योंकि हम सब शैक्षणिक यात्रा के लिए बनारस जा रहे थे।

बनारस पहुंच कर सर्वप्रथम भारतेंदु जी के भवन को गए भारतेंदु हरिश्चंद्र जी को आधुनिक हिंदी का सूत्रधार कहा जाता है। जिनके द्वारा आधुनिक हिंदी की शुरुआत हुई थी। ऐसे महान साहित्यकार के घर पहुंचकर हम सब बहुत ही ज्यादा आनंदित महसूस करने लगे। वहां भारतेंदु जी के घर में हमने भारतेंदु जी के द्वारा लिखी गई पाण्डुलिपियों को देखा।

उसके बाद हम सब भारतेंदु जी के घर से कुछ ही दूर में स्थित नागरी प्रचारिणी सभा गए वहां पहुंचने के लिए हम सब पैदल ही गए और जाने के क्रम में मैंने वहां देखा कि बनारस में बहुत सारी गलियां है, एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए हमने ऐसी कई गलियों को पार किया तब जाकर हम सब अपनी दूसरी मंजिल के पास पहुंचे। अत्यधिक गलियां होने के कारण बनारस को गलियों का शहर भी कहा जाता है। शायद इसीलिए यहां इतनी पुरानी गलियां अभी भी मौजूद हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा एक ऐसा स्थान है, जहां पर अनेक विद्वानों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया। नागरी प्रचारिणी सभा मेरे लिए किसी पवित्र मंदिर से कम नहीं था, जहां पर ना जाने कितने महान साहित्यकारों ने मिलकर समाज को अपनी रचनाओं और साहित्य के माध्यम से ज्ञान अर्पित किया है। उसके बाद हम गंगा घाट गए और वहां पर हमने संध्या के समय मां गंगा की आरती देखी वहां की आरती का दृश्य सच में अनुपम और अद्भुत था। फिर रात्रि को हम सब वापस अपने होटल को आए और इस तरह यात्रा का पहला दिन समाप्त हुआ।

दूसरे दिन की सुबह हम सब तैयार होकर काशी विश्वनाथ जी के मंदिर गए वहां बाबा विश्वनाथ जी का और मां अन्नपूर्णा जी के दर्शन हम सब ने किये। बाबा विश्वनाथ जी का आशीर्वाद लिया, काशी विश्वनाथ जी का मंदिर पूरे भारत में बहुत प्रचलित है। फिर मंदिर के दर्शन के बाद हम सब सारनाथ गए। सारनाथ की अपनी अलग विशेषता है, सारनाथ में सर्वप्रथम गौतम बुद्ध जी ने उपदेश दिया था। सारनाथ का बौद्ध धर्म से गहरा नाता है, सारनाथ में देश विदेश से बौद्ध धर्म के श्रद्धालु आकर बुद्ध का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सारनाथ के बाद हम सब बनारस से कुछ मील दूर लमही गांव पहुंचे जहां प्रेमचंद जी का जन्म हुआ था। वहां पर लमही में प्रेमचंद जी की बहुत सी यादें बसी हुई थी, वहां पर हमने प्रेमचंद जी के मकान को देखा उनके द्वारा लिखी गई कई रचनाओं को देखा पढ़ा और कुछ उपन्यास और पुस्तकों को

हमने खरीद लिया। लमही गांव में कुछ समय व्यतीत करने के पश्चात हम सब वापस अपने स्थान को लौट आए।

तीसरे और आखिरी दिन की सुबह को हम सब अपने कॉलेज की यूनिफार्म पहन कर तैयार हो गए, क्योंकि आज हमें काशी हिंदू विश्वविद्यालय जाना था। बनारस का काशी हिंदू विश्वविद्यालय केवल बनारस में ही नहीं बल्कि पूरे भारत के कई विश्वविद्यालयों में से सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन माना जाता है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय का प्रारंभ आज से लगभग सौ वर्ष से भी अधिक सन 1916 में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने किया था। जैसे ही हमने विश्वविद्यालय में प्रवेश किया तो हमें ऐसा लगा जैसे हम माँ सरस्वती के भव्य मंदिर में हैं। सर्वप्रथम हमने विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित बिरला मंदिर में विराजमान बाबा विश्वनाथ जी के दर्शन किये। मंदिर के दर्शन के पश्चात हम सब वहां से विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय गए, जहां पर कई पुस्तकें रखी हुई थी। हम सब ने पुस्तकें देखी। वहां की सभी पुस्तकें एक से बढ़कर एक थी, हर एक पुस्तक ज्ञान का असीम भंण्डार थी। मेरे लिए तो वह स्थल किसी ज्ञान के मंदिर के समान था, इतनी शांति थी वहां पर कि मन एकदम शांत हो ग्या। समय कम होने की वजह से हम सिर्फ हिंदी की पुस्तकें देख पाये।

उसके बाद हम सब भारतीय कला केंद्र गए। जहां पर हमने भारत की प्राचीन ललित कलाओं को देखा जिसे कई वर्ष पूर्व चित्रकारों ने अपने हाथों से चित्रकारी की थी। और कहीं पर खुदाई द्वारा प्राप्त प्राचीन मूर्तियों को भी देखा। उन मूर्तियों की बनावट बहुत अद्भुत और बहुत सुंदर थी। उन मूर्तियों को देखने के पश्चात यह ज्ञात होता है, कि प्राचीन काल के लोगों में कितनी प्रतिभा थी। ये मूर्तियाँ भारत के गौरवशाली इतिहास और सभ्यता की मूक साक्षी है।

उन सभी कलाकृतियों को देखने के पश्चात अंत में हम सब काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग गए जहां पर हमें सबसे अधिक प्रसन्नता हुई, क्योंकि यह वही हिंदी विभाग है जहां पर कई विद्वानों ने अपना योगदान हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार प्रसार में दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि कई महान विद्वान इस हिंदी विभाग के अध्यापक भी रह चुके हैं। वहां पर हम सब हिंदी विभाग के कई विद्यार्थियों से भी मिले और उनसे वार्तालाप किया, हमने अपने अपने अनुभव साझा किये। वहां के अध्यापक और अध्यापिकाओं से भी हम मिले। उन सभी अध्यापकों ने कई ज्ञानवर्धक बातें बताई जो हमारे लिए भविष्य में अत्यधिक लाभदायक साबित होंगी। मुझको काशी हिंदू विश्वविद्यालय में आकर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैंने अपने जीवन में चारों धामों की यात्रा यहां आकर पूर्ण कर ली हो। किसी ने सत्य ही कहा है, 'जो शांति किसी मंदिर या तीर्थ स्थल में नहीं मिलती, वह शांति आपको ज्ञान के मंदिर अर्थात विद्यालय से प्राप्त होती है', ऐसा ही अनुभव उस दिन मुझे हुआ।

बनारस के वो तीन दिन मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण दिनों में से हैं, जिसे मैं अपने पूरे जीवन काल में कभी नहीं भूल पाऊंगी।

बांगी हंसदा, + 3 प्रथम वर्ष

किस्मत

कितनी अजीब होती है यह ज़िन्दगी,
जो कभी आसमान तो कभी जमीन को छूते हैं।
वह मासूम चेहरे जिनमें मासुमियत होनी चाहिए,
वह अब लकीरों में बदल चुकी हैं।
जिन हाथों में खिलौने और पुस्तकें होनी चाहिए,
वे हाथ अब मांगने के लिए उठ चुके हैं।
जो घर के भार के नीचे दब चुका है।
ग़रीबी भी क्या गजब होती है,
सूख जाते हैं आंसू जो मां के आंचल में,
पोंछते हुए कुछ समझा नहीं पाती।
चलती है धारा कभी भाग्य को कोसते
कभी मदद को भगवान के आगे गिड़गिड़ाते।
इमसें भाग्य या हाथों के लकीरों की क्या गलती है?
जो वह कभी समझ ही नहीं पता है।

शरीफा शरवानी, +3 तृतीय वर्ष

नारी

भूले से मत कीजिये, नारी का अपमान,
नारी जीवनदायिनी, नारी है वरदान।

माँ बनकर देती जनम, पत्नी बन संतान,
जीवन भर छाया करे, नारी वृक्ष समान।

नारी भारत वर्ष की, रखे अलग पहचान,
ले आई यमराज से, वापस पति के प्राण।

नारी कोमल निर्मला, होती फूल समान,
वक्त पड़े तो थाम ले, बरछी तीर कमान।

नारी के अंतर बसे, सहनशीलता आन,
ये है मूरत त्याग की, नित्य करे बलिदान।

संगीता, +3 प्रथम वर्ष

मोक्षदायिनी काशी

काशी धर्म एवं विद्या की पवित्र तथा प्राचीनतम नगरी के रूप में विख्यात है। वैदिक साहित्य की संहिताओं, ब्राह्मण ग्रथों एवं उपनिषदों में काशी का उल्लेख है। साथ ही पाणिनी, पतंजलि आदि ग्रथों में भी काशी की चर्चा है। पुराणों में स्पष्ट है कि काशी क्षेत्र में पग-पग पर तीर्थ हैं।

काशी विश्वनाथ मन्दिर बारह ज्यर्तिलिंगों में से एक है। यह मंदिर पिछले कोई हजारों वर्षों से स्थित है। काशी विश्वनाथ मंदिर का हिन्दू धर्म में एक विशिष्ट स्थान है। ऐसा माना जाता है कि एक बार इस मंदिर के दर्शन करने ओर पवित्र गंगा में स्नान कर लेने से मोक्ष की प्राप्ति होती हैं। इस मंदिर के दर्शन करने हेतु शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, तुलसीदास सभी का आगमन हुआ था।

काशी विश्वनाथ मंदिर से कुछ ही दूरी पर माता अन्नपूर्णा का मंदिर है। उन्हें तीनों लोकों की माता माना जाता हैं। कहा जाता है कि इन्होंने स्वयं भगवान शिव को खाना खिलाया था।

हिन्दू धर्म में कहते हैं कि प्रलय काल में भी वाराणसी नगरी का लोप नहीं होता। उस समय भगवान शंकर इसे अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं और सृष्टि काल आने पर इसे नीचे उतार देते हैं।

कहते हैं कि सर्वतीर्थमयि एवं सर्वसंतापहारिणी मोक्षदायिनी काशी की महिमा ऐसी है कि यहां प्राणत्याग करने से ही मुक्ति मिल जाती है। ऐसा माना जाता है कि भगवान भोलेनाथ मरते हुए प्राणी के कान में तारक-मंत्र का उपदेश करते हैं, जिससे वह आवगमन से छूट जाता है, चाहे वह प्राणी कोई भी क्यों ना हो। परपीड़ित जनों के लिए काशीपुरी एक मात्र गति हैं।

कीर्तिपर्णा, +3 प्रथम वर्ष

आपकी बात

"हिंदी भारती" का जनवरी - फरवरी अंक मेरे लिए यादों का पिटारा है। जिसको पढ़ते ही मुझे विभाग में बिताए इस साल के हर वो पल याद आ रहा था जो मैंने विभाग में अंतिम वर्ष की छात्रा के रूप में बिताया है। सस्मिता का 'आम का पेड़' पढ़ते ही मैं भावुक हो गई, इसका कारण यही था कि उस आम के पेड़ की तरह यह विभाग भी पिछले तीन सालों से हम सब का दूसरा घर बन गया है, और अब वक्त के साथ वह हमें इस आम के पेड़ की तरह विदा कर रहा है जिंदगी के दूसरे पडाव की ओर। प्रज्ञा, कविता, शरीफा, हाफिजा इन सब के लेखों को पढ़ते वक्त मुझे उन दिनों की याद आ रही थी जब हम सब कक्षा में बैठकर इन्हीं विषयों को एक के बाद एक पढ़ा करते थे। आज वही सब बातें, वह सारी यादें 'हिंदी भारती' में कैद होकर हमेशा हमेशा के लिए महफूज हो गए हैं। जिसे मैं जब चाहे पढ़कर फिर से उन दिनों को याद करके मुस्कुरा सकती हूं। अंतिम वर्ष की छात्रा हूं, विभाग में अब कुछ ही दिन बचे हैं, पर आशा करती हूं कि 'हिंदी भारती' के माध्यम से मैं विभाग से जुड़ी रहूंगी।

सुभश्री शताब्दी दास, +3 तृतीय वर्ष

हमें और हमारे कमला नेहरू महिला महाविद्यालय को जितनी पहचान नहीं मिली है उससे कई ज्यादा इस ई-पत्रिका को मिली है। दरसल इस पत्रिका की वजह से हमें भी पहचान मिली है। इस वर्ष हम लोग की स्नातक की पढ़ाई खत्म हो रही है, परंतु हम जहाँ भी रहेंगे इस ई-पत्रिका के सम्मान को बढ़ाने का प्रयास करते रहेंगे, क्योंकि ये हमारी पहचान बन चुका है। साथ ही ये पत्रिका इस महाविद्यालय में हमारी प्यारी वेदुला माम् और प्यारे दोस्तों के साथ बिताये हुए हर एक पल की याद दिलाती रहेगी। वेदुला मैडम को नमन।

श्रद्धांजलि भउल, +3 तृतीय वर्ष

'हिंदी भारती' वह ई - पत्रिका है जो कमला नेहरू महिला महाविद्यालय, भुवनेश्वर के हिंदी विभाग की ओर से हर महीने निकला करती है। कहते हैं कि साहित्य के क्षेत्र में अगर कदम बढ़ाना हो तो अपने आप में और अपने लेखन में रचनात्मकता होनी चाहिए। 'हिंदी भारती' वह जरिया है जिसमें हम अपनी लेखन प्रतिभा को जान सकते हैं। हमारे हर नए लेखन की वजह से हमारी भाषा में बहुत परिवर्तन आने लगा है, तथा अगली पत्रिका में क्या देना है, क्या लिखना है यह हम पहले से सोच विचार कर रख लेते हैं। मेरे हिसाब से किताबी पढ़ाई के साथ-साथ ऐसे लेखन का कार्य करें तो हिंदी के प्रति हमारा जो लगाव है वह हमें हिंदी की ओर खींच लाएगी। हम इस ई - पत्रिका के माध्यम से हम खुद के लेख के साथ-साथ अन्य छात्राओं के लेख को भी पढ़ते हैं तथा जानने एवं समझने की मौका मिलता है। इससे हमें शिक्षा तथा अनेक जानकारी भी प्राप्त होती है। मैं धन्यवाद करती हूं 'हिंदी भारती' का तथा संपादक डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी जी का जिन्होंने हमें इतना उत्साहित किया।

स्तुति प्रज्ञा, +3 तृतीय वर्ष

मैं प्रथम वर्ष से लगातार इस पत्रिका में लेख लिख रही हूँ, और इस तीन वर्षों में मेरी भाषा मैं बहुत सुधार आया है। इसमें प्रकाशित कुछ कहानी, कविता मुझे बहुत अच्छे लगे। मैं मेरी मैडम का बहुत धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने हमें लिखने का मौका दिया। इस पत्रिका की वजह से मैं हिन्दी मैं टाइपिंग करना सीख पायी। मैं विभाग की जितनी भी छोटी बहन हैं उनसे कहना चाहती हूँ कि वे इसी तरह ई पत्रिका को और भी आगे बढ़ायेंगी। इसे कभी बन्द होने मत होने देना और आर्टीकल लिखते रहना, जिससे तुम लोगों की भाषा में बहुत सुधार आयेगा। यह हमारा तृतीय वर्ष है लेकिन मैं पूरी कोशिश करूँगी कि मैं भी आर्टिकल लिख कर भेजती रहूँगी।

एक बार फिर मैडम को बहुत सारा धन्यावाद और असीम श्रद्धा। आज मैं जो भी हूँ आपकी वजह से हूँ।

हफिज़ा बेगम, +3 तृतीय वर्ष

हिंदी भारती हम जैसी छात्राओं के लिए एक माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने अंदर जो प्रतिभा छुपी है, हम उसे जान सके और लगातार प्रयास करते हुए अपने सपनों की उड़ान भर सकें। इस उड़ान के लिये हिन्दी भाषा, अपनी विशिष्ठ शैली और साहित्य सृजन में खुद को मजबूत करना पड़ता है। 'हिंदी भारती' के द्वारा हमारा यह प्रयास सफल हुआ है। जिसके माध्यम से हम हर क्षेत्र में सफल हो सकें। छात्र जीवन में कई चुनौतियां होती हैं, यह पत्रिका हमें हर कठिनाई से लड़ने के लिए तैयार करती है, ताकी हम कभी हारे ना। इस तीन साल की यात्रा में लड़ते झगड़ते पता ही नहीं चला कि कैसे वक्त इतनी जल्दी गुज़र गया। अब यह यात्रा समाप्त होने को आई है। कमला नेहरु हिंदी विभाग से हम निकल जायेंगे। अब कभी आपस में लड़ने का मौका ना मिलेगा। धन्यवाद करती हूं मेरे साथ हमेशा रहने वाली, हर काम में योगदान देकर प्रोत्साहित करने वाली, जो हर मुश्किल घड़ी में कभी मां, कभी दोस्त बन कर समझाने वाली, मेरी प्रेरणा, मेरी प्यारी सी वेदुला माम् को। जिनके कारण मैं हर महीने 'हिंदी भारती' के लिए कुछ लिख पाती हूं। और धन्यवाद करती हूं मेरी प्यारी सी सहेलियों और छोटी बहनों को जिन्हें मेरी कविताएं पसंद आती हैं, जिसकी वजह से मुझे और लिखने की हिम्मत मिलती है। जनवरी, फरवरी अंक की हर कहानी, कविता, लेख अद्भुत है। मैं कोशिश करूंगी कि हमेशा 'हिंदी भारती' के साथ जुड़ी रहूं।

शरीफा शरवानी, +3 तृतीय वर्ष

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय

का इतिहास

https://youtu.be/Ruipxy0RNE0

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय

हिंदी विभाग

https://youtu.be/luKEIonnx9k

यादों के गलियारों से

महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय की अनुमति से प्रारंभ हुई शैक्षणिक यात्रा

आधुनिक हिंदी साहित्य के पुरोधा भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का घर 'भारतेंदु भवन'

नागरी प्रचारिणी सभा

गंगा की सैर

सारनाथ में बुद्ध स्तूप एवं बुद्ध मंदिर

लमही गाँव में प्रेमचंद स्मारक

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का केंद्रीय पुस्तकालय

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में

कुछ हल्के फुल्के पल

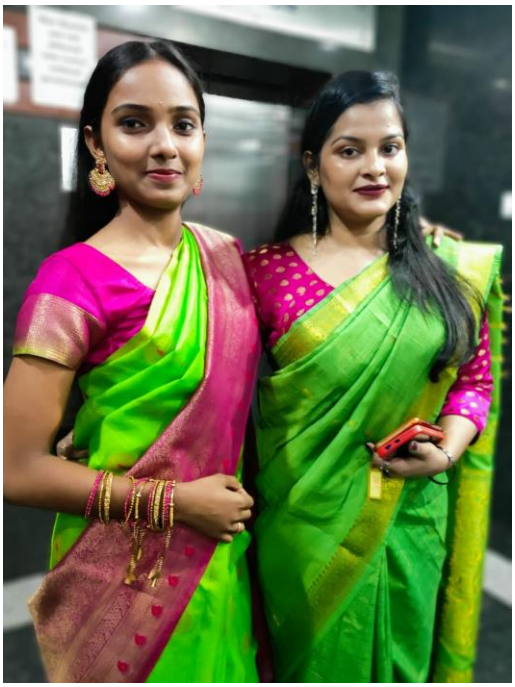

धन्यवाद